नियंत्रणों पर पुनर्विचार

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक १०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद ९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ५ मओी, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सोमनाथ मन्दिर

[मेरे अेक पत्रका अुत्तर देते हुअे श्री क० मा० मुंशीने मुझे जो चिट्ठी लिखी है, वह यहां दी जा रही है। अुत्तर अितना स्पष्ट है कि मेरी चिट्ठीका प्रकाशन या श्री मुंशीके अिस अुत्तर पर किसी तरहकी टिप्पणी अनावश्यक लगती है।

—कि० घ० म०]

१, क्वीन विक्टोरिया रोड,
नयी दिल्ली,
२६ अप्रैल, १९५१

प्रिय किशोरलाल,

आपका २३ ता० का पत्र मिला। धन्यवाद। हम लोगोंने बहुत साफ शब्दोंमें यह निर्णय किया है कि हरिजन सोमनाथके मन्दिरमें ठीक अुसी तरह पूजा कर सकेंगे जिस तरह दूसरे लोग। अिस निर्णयको माननेके लिअे कुछ ब्राह्मण तैयार नहीं थे, अिसलिअे हमने प्रतिष्ठा-विधिके लिअे वाओीके तर्कतीर्थ श्री लक्ष्मण शास्त्री और अन्य लोगोंको आमंत्रित किया। शायद आप जानते होंगे कि अिस मन्दिरकी मध्यकालकी परम्पराके अनुसार मन्दिरके दस्तावेजमें यह भी साफ अुल्लेख किया गया है कि मन्दिर अ-हिन्दुओंके लिअे भी खुला रहेगा। सिर्फ अितना ही नहीं, आजकी परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुअे, हम अिसका आग्रह रख रहे हैं कि आगन्तुकोंको सिर्फ नियंत्रणसे मुक्त अन्न ही खिलाया जाय और होम-हवन अित्यादिमें खाद्यान्नोंका अुपयोग न किया जाय। अिस निश्चयके कारण प्राचीन मतवादी वर्गको नाराजी भी हुओी है, पर हमने अुसका खयाल नहीं किया है।

(२) सौराष्ट्र सरकार अिसकी धार्मिक विधि पर पैसा खर्च कर रही है, यह बिलकुल झूठ है। सड़कोंकी मरम्मत, अुन पर अुजालेके प्रबन्ध, तथा तीर्थ-यात्रियोंके लिअे पानीकी तथा दूसरी सुविधाओं पर जरूर वह कुछ पैसा खर्च कर रही है, ठीक अुस तरह जिस तरह कि हरअेक प्रान्तीय सरकार अपने क्षेत्रमें होनेवाले धार्मिक मेलोंमें करती है। मुझे मालूम है कि बापूकी सलाह पर सरदारने मन्दिर सरकारी पैसेसे बनवानेका अिरादा छोड़ दिया था। मन्दिरके निर्माण और लिंगकी प्रतिष्ठामें जो भी खर्च होगा, वह मंदिरके ट्रस्टकी निधि तथा सार्वजनिक चंदेमें से ही होगा।

(३) धर्म-निरपेक्ष राज्यका अर्थ नास्तिक या धर्म-विरोधी राज्य नहीं है। अुसका मतलब सिर्फ अितना ही है कि विभिन्न धर्मोंके अनुयायी अपने-अपने धर्मका पालन आजादीसे कर सकेंगे। राज्यकी धर्म-निरपेक्षता अुसे देवस्थान आदि बनवाने या अुनकी मरम्मत करनेसे नहीं रोकती। भारत-सरकारने तो बहुतसी मस्जिदों आदिकी मरम्मत की ही है। और न अुसके कारण धार्मिक देव-स्थानोंकी मदद करनेमें ही सरकारको कोओी बाधा आती है। हमारी बहुतसी सरकारें धार्मिक संस्थाओंको पैसेकी मदद देती हैं। मेरी तो यह राय है कि अैसी संस्था यदि आर्थिक, सामाजिक या शैक्षणिक ढंगका कोओी अुपयोगी कार्य कर रही हो, तो यह राज्यका कर्तव्य है कि वह अुसकी सहायता करे। हां, अगर राज्यने धर्मके नाशका निर्णय किया हो, तो बात अलग है।

(४) मैंने अभी पत्रकारोंको अूपर लिखे अनुरूप अेक संवाद भी दिया है। लेकिन आपकी अिच्छा हो, तो आप अिस पत्रका प्रकाशन भी कर सकते हैं। सप्रेम,

(अंग्रेजीसे)

आपका
क० मा० मुंशी

कस्तूरबा और गांधी स्मारक निधियां

[नयी दिल्लीके साप्ताहिक 'विजिल' के १० मार्च, १९५१ के अंकमें प्रकाशित अेक लेखमें अिन निधियोंकी व्यवस्था और व्यवस्थापकोंकी आलोचना प्रगट हुओी थी। बादके अंकमें श्री जे० सी० कुमारप्पाने अेक चिट्ठी लिखकर अिस आलोचनाका समर्थन किया। अिन निधियोंके वर्तमान अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकरने अिन दोनों आलोचनाओंके जवाबमें अेक बड़ासा स्पष्टीकरण भेजा है। स्पष्टीकरण काफी लम्बा हुआ है और चूंकि यहां मूल आलोचनाओंका प्रकाशन हम नहीं करना चाहते, अिसलिअे अिस अुत्तरको भी पूरा छापना जरूरी नहीं लगता। लेकिन प्रसंगवश अिस अुत्तरमें दोनों निधियोंकी काफी जानकारी आ गओी है, जिसमें लोगोंकी स्वाभाविक दिलचस्पी हो सकती है। अिसलिअे हम यहां वाद-प्रतिवादका अंश काटकर बाकी संक्षेपमें दे रहे हैं।

—कि० घ० म०]

कस्तूरबा स्मारक निधि

१. ट्रस्टीगण

मुख्य आरोप यह है कि निधिकी रकम बैंकोंमें जमा है, और अुसके ट्रस्टी पुरानी किस्मके लोग हैं, जिनकी मुट्ठी खर्च करनेमें मुश्किलसे खुलती है और जिन्हें रचनात्मक कामकी आवश्यकताओंकी कोओी कल्पना नहीं है। अिसमें शक नहीं कि अिनमें से कुछ लोग बूढ़े हैं। लेकिन कार्य-समितिके १२ सदस्योंमें श्री देवदास गांधी, श्री आशादेवी आर्यनायकम्, श्री जाजूजी, श्री लक्ष्मीनारायण और सुशीला पओी भी हैं। क्या अिनके बारेमें यह कहा जा सकता है कि अिन्हें रचनात्मक कामकी आवश्यकताओंकी कोओी कल्पना नहीं है?

कस्तूरबा निधिके ट्रस्टियोंमें कुछ लोग व्यापारी वर्गके हैं, पर अुन्हें गांधीजीने खुद ही अिसके लिअे निमंत्रण दिया था, और रचनात्मक कामके क्षेत्रमें अपनी मर्यादाअें समझते हुअे अुन्होंने

www.vinoba.in

कभी भी निधिके वास्तविक काममें कोअी दखल नहीं दिया है। अुनकी हैसियत केवल कब्जेदार (होल्डिंग) ट्रस्टियोंकी है, और अिस हैसियतसे वे निधिकी बाकी रोकड़के ठीक हिसाब-किताबका और अुसकी अुचित लगाअी-रखाअी (investment) का ही काम देखते हैं और सलाह देते हैं। यही बात गांधी-स्मारक निधिके बारेमें भी है।

२. खर्च

दूसरा आरोप यह है कि कस्तूरबा ट्रस्ट अपनी पूंजी पर मिलनेवाले वार्षिक ब्याजको भी खर्च नहीं करता। सन् १९५० की रिपोर्ट अभी तैयार नहीं हुअी है, अिसलिअे यहां हम ३१ दिसम्बर, १९४९ को पूरे हुअे सालके हिसाबसे कुछ आंकड़े पेश करते हैं। पाठक देखें कि अिस आरोपमें कितनी सचाअी है। अिस साल पूंजी पर रु० ३,७५,३०५–१३–३ ब्याज मिला और साल भरमें रु० ६,९२,६८४–६–८ स्थायी शीघ्रव्ययी (रिकरिंग) खर्च हुआ, और रु० २,९५,३६०–११–८ मंदव्ययी (नान-रिकरिंग) खर्च हुआ। यह दूसरा खर्च पूंजी स्वरूप है, यानी जमीन, मकान, फर्नीचर, भंडार (dead stock) आदि पर हुआ है। अिसे देखते हुअे यह आरोप कैसे किया जा सकता है कि पूंजी पर मिलनेवाला ब्याज भी खर्च नहीं किया जाता?

३. कामके केन्द्र

वास्तविक कामका ब्यौरा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वार्षिक रिपोर्टमें मिल सकता है, और जो चाहे वहां देख सकता है। कामका संक्षिप्त ब्यौरा यहां पेश है:

ग्रामसेवाके केन्द्र	१९४६	१९४७	१९४८	१९४९
बुनियादी और पूर्व बुनियादी तालीम	५२	१४०	१७०	२०७
आरोग्य-मंदिर और सूतिका-गृह	१०	१८	३२	४७
जोड़	६२	१५८	२०२	२५४

ये केन्द्र देशके विविध भागोंमें सब जगह बिखरे हुअे हैं और अुनमें काम कर रही देशसेविकाओंकी संख्या ३८४ है। अिस संख्यामें अुन सेविकाओंकी गिनती नहीं, जो किन्हीं दूसरे केन्द्रोंमें काम कर रही हैं, या जिन्हें अभी कामकी तालीम मिल रही है।

देशके बेहिसाब विस्तृत देहाती क्षेत्रोंमें अुसकी संस्थाअें काम कर रही हैं, अिसका ट्रस्ट गौरव कर सकता है। यह सही है कि देशकी आवश्यकताओंको देखते हुअे केन्द्रोंकी संख्या बिलकुल कम दिखती है, लेकिन जाहिर है कि देशकी सम्पूर्ण आवश्यकताओंकी पूर्ति ट्रस्ट नहीं कर सकता। वह तो कार्यकर्ता तैयार कर सकता है और कुछ आदर्श केन्द्र चला सकता है। साधारण जनता और प्रादेशिक सरकारोंको ही बाकी काम अुठाना पड़ेगा। यह शिकायत की गयी है कि अितना समय हो गया तब भी काम कुछ हुआ नहीं। लेकिन सवाल किसी यांत्रिक कामको दुहराते रहनेका नहीं है; हमें बापूके रास्तेसे काम करना है। और अिसके लिअे पहली जरूरत अैसे कार्यकर्ता तैयार करनेकी है, जो रचनात्मक कामका रहस्य और बापूका दृष्टिकोण समझें। अिसमें कुदरतन समय तो लगता है।

महात्मा गांधी स्मारक निधि

१. तैयारीका काम

यह काम अभी भी नया है और अुसमें पहली जरूरत अैसे संगठनका निर्माण करनेकी है, जो अुसे बखूबी कर सके। पैसा अिकट्ठा करने, अुसका हिसाब करने और सलाहकार-समितियों तथा और प्रान्तीय संचालकोंका चुनाव करनेमें ही बहुतसा समय लग गया। जिन पर शुरूमें पैसा अिकट्ठा करनेका काम था, वे यदि जल्दी जवाब न दें, हिसाब पेश न करें, तो अिसमें वर्तमान ट्रस्टियोंका क्या दोष? शुरू-शुरूमें जिन्होंने काम किया, अुन्होंने अिस बारेमें अपनी सिफारिशें भेजनेमें बहुत समय लिया कि सलाहकार-समितियोंमें कौन कौन लिये जायं।

तब भी कुल २४ (या २५?) अिकाअियोंमें से २० की प्रान्तीय सलाहकार-समितियां बन गयी हैं, और शेष ४ की बन रही हैं। और अिन समितियोंका निर्माण ट्रस्टियोंने मनमाने ढंगसे नहीं किया है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं और पैसा अिकट्ठा करनेवालोंने जिन नामोंकी सूचना की थी, अुनमें से ही वे बनायी गयी हैं। सलाहकार-समितिके निर्माणकी साधारण विधि यह है: अेक समितिमें साधारणतः १२ सदस्य होते हैं। अुनमें से ५ पैसा अिकट्ठे करनेवाली संस्थाओंके प्रतिनिधि होते हैं। अुनमें से ६ अखिल भारतीय या प्रान्तीय संस्थाओंके प्रतिनिधि होते हैं, जो रचनात्मक काम कर रही हैं। और अुद्योगपतियोंका, जिनसे निधिकी लगभग ४५ प्रतिशत रकम मिली है, सिर्फ अेक प्रतिनिधि होता है।

२. सहायतामें दिया गया पैसा

लेखमें शिकायत की गयी है कि रचनात्मक कार्यकर्ताओंको कितनी ही कठिनाअियोंसे जूझना पड़ रहा है, अुनका पैसा लगातार कम हो रहा है और अड़चनें बढ़ रही हैं। अखिल भारतीय चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ तथा गांधीजीकी बनायी अन्य दूसरी संस्थाओंको पैसेकी कमीका कष्ट हो रहा है, क्योंकि निधिसे सहायता नहीं मिलती। सन् १९५० के अन्त तक रचनात्मक तथा अैसे ही दूसरे काम कर रही कुछ महत्त्वपूर्ण संस्थाओंको कुल कितना पैसा दिया गया, अिसका ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:

१. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ	१,६०,००० रु०
२. अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, वर्धा	७०,००० रु०
३. हरिजन सेवक संघ, दिल्ली	१,०६,१६९ रु०
४. भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, दिल्ली	५६,२५० रु०
५. विश्व शान्ति परिषद्	१,५०,००० रु०
६. फुटकर सहायता	८९,०४० रु०
कुल	६,३१,४५९ रु०

अिस हिसाबमें नीचे दी गयी सहायताअें शामिल नहीं हैं:

१. गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	१,३५,००० रु०
२. निसर्ग चिकित्सा केन्द्र अुरुलीकांचन	३८,३४६ रु०

कुछ दूसरी छोटी-छोटी सहायताअें भी दी गयी हैं। अिस तरह सब मिलाकर निधिके केन्द्रीय हिस्सेसे ८,०४,८०५ रु० की सहायता दी गयी है।

३. मदद

निधिके प्रान्तीय हिस्सोंमें से प्रान्तीय सलाहकार-समितियोंकी सिफारिश पर या अन्यथा सन् '५० के अन्त तक रु० ६,०२,६३१-९-९ की रकम मददकी तरह दी गयी है। जिन संस्थाओंको यह मदद दी गयी है, अुनके कामोंकी गिनती सामान्य तौर पर अिन वर्गोंके अन्तर्गत हो सकती है: आदिम तथा वनवासी जातियोंके क्षेत्रोंमें काम, बुनियादी तालीम, डॉक्टरी सहायता, सूतिकागृहोंका संचालन, ग्रामोद्योग, गो-सेवा, हरिजन-सेवा, स्त्रियोंकी अुन्नति आदि।

मुझे लगता है कि अूपर जो तथ्य दिये गये हैं, अुनसे रचनात्मक कामके बारेमें स्मारक-निधिकी दिलचस्पीका पता चल जायगा।

४. योजनायें

ट्रस्टियोंका ध्यान दूसरी योजनाओं पर भी है। ये योजनायें अभी भी पूरी बनी नहीं हैं, अुन पर विस्तारपूर्वक और ब्यौरेवार विचार चल रहा है। अिनमें से कुछ अिस प्रकार हैं:

www.vinoba.in

(अ) गांधीजीकी रचनाओं तथा अुनसे संबन्ध रखनेवाली दूसरी चीजोंके संग्रहालय। ये संग्रहालय दिल्ली, सेवाग्राम, अहमदाबाद और किसी अेक दूसरी जगह बनाये जायंगे।

(आ) अुनके और अुनसे संबंध रखनेवाले दूसरे कागजों, रचनाओं, चिट्ठी-पत्री आदिकी फोटो-नकलें करनेका काम शुरू हो गया है और चल रहा है।

(अि) जहां कहीं गांधीजी गये हों और अुनके जानेसे कोअी अैतिहासिक घटना हुअी हो, वहां वहां अिस बातका निदर्शक योग्य स्मारक बनवाना। यह काम बहुत बड़ा और देश-व्यापी होगा। यह अभी ठीक प्रगति कर रहा है।

(अी) गांधीजीके जीवनकी घटनायें बतानेवाली सिनेमा-तसवीरें।

(अु) गांधी-घरोंकी योजना। अिस योजनाके अनुसार गांवोंमें अैसे केन्द्रोंकी स्थापना की जायगी, जहां ग्रामसेवक रहेंगे और सर्वोदयके सिद्धांतका खयाल रखते हुअे जितने रचनात्मक काम कर सकते हैं, करेंगे। अिसमें कार्यकर्ताओंकी तालीमका सवाल है। यह काम भी हाथमें लिया जा चुका है।

(अू) कोढ़ियोंकी सेवा — ट्रस्टने अिस कामको गांधीजीकी यादका अेक मुख्य अंग माना है। कुष्ठ-रोग-निवारण मंडलने (Leprosy Medical Board) प्रारम्भिक काम शुरू भी कर दिया है।

१. कठिनाअियां

जनताको समझना चाहिये कि जो गांधीजीके बताये रास्तेसे रचनात्मक काम कर सकें, अैसे योग्य कार्यकर्ताओंका अभाव है। वे काफी संख्यामें नहीं मिलते। यही हमारी मुख्य कठिनाअी है। यह अेक अखिल भारतीय काम है और अिसमें सवालकी छान-बीन, सोच-विचार और योजनाका बहुतसा प्रारंभिक काम करना पड़ता है। अैसा न करें, तो निधिका अपव्यय होनेका डर रहेगा, या पैसा चल रहे कामोंकी यांत्रिक आवृत्तिमें व्यर्थ खर्च होगा। लोगोंको तो स्मारक-निधिसे यह अपेक्षा करनी चाहिये कि वह (जहां तक अपनी मर्यादाओंमें रहते हुअे अुसके ट्रस्टियोंसे हो सकता है) गांधीजी द्वारा दी गयी दृष्टि और भावसे ही काम करेगी। कस्तूरबा निधिके बारेमें गांधीजीके रहते हुअे ही अैसे आक्षेप किये गये थे कि वे पैसा पकड़कर बैठ गये हैं और अुसका कोअी अुपयोग नहीं कर रहे हैं। लोग यह भूल गये थे कि यह निधि तब गांधीजीके निरीक्षणमें और अुनके ही आदेशके अनुसार कामकी पूर्व तैयारी कर रही थी। अैसे आरोप जब किये जाते थे, तब गांधीजी हंसकर कहते थे: "मैं पैसा पकड़कर रख रहा हूं, या क्या कर रहा हूं, यह तो मैं ही जानता हूं। यह जरूर है कि मैं पैसा बरबाद नहीं करना चाहता हूं।" हम यह बात शायद गांधीजीका जोर और अधिकार लेकर नहीं कर सकते। लेकिन हम भी विनम्रता-पूर्वक यह दावा करना चाहते हैं कि जहां तक संभव है हम गांधीजीकी ही बतायी हुअी राह पर चलनेकी कोशिश कर रहे हैं। देर क्यों हो रही है, अिसकी कैफियतमें हमें यही कहना है, और हरअेक प्रामाणिक प्रश्नकर्त्ताको अिससे संतोष हो जाना चाहिये। मुमकिन है कि हम कामयाब न हों, पर अभी तो अिसका पूरा प्रयत्न कर रहे हैं कि जो भी बनायें वह गांधी-विचार और गांधी-भावनाकी सुदृढ़ नींव पर ही बनायें।

२. प्रसिद्धि

काम रचनात्मक है और गांवोंमें ही हो रहा है। अिसलिअे अखबारोंमें, जो कि बहुधा शहरी समाचार ही छापते हैं, अुसकी खास प्रसिद्धि नहीं होती। अिसके सिवा अिस काममें अैसा कोअी आकर्षण भी नहीं है, जैसा राजनीतिमें। यह भी अेक कारण है जिससे अखबारवाले दोनों ट्रस्टोंके मातहत हो रहे कामका प्रकाशन करनेमें दिलचस्पी नहीं रखते। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि आज तक हमने किसी तरहका विज्ञापन खुद भी चाहा नहीं; यह आशा रही कि आगे चलकर हमारा काम खुद ही बतायगा कि हम क्या करते रहे हैं। और मुझे कहते हुअे बड़ी खुशी होती है कि अब कस्तूरबा निधिका काम जो लोग भी देखते हैं, सराहते हैं।

दोनों ट्रस्ट किसी भी प्रश्नकर्ताको पूरी जानकारी देनेके लिअे तैयार रहेंगे और यदि वह कामके सुधारके लिअे सुझाव दे तो अिसके लिअे कृतज्ञ रहेंगे।

(अंग्रेजीसे) **ग० वा० मावलंकर**

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

शिक्षक-तालीम पाठ्यक्रम १९५१–५२

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ नअी तालीमकी व्यावहारिक और सैद्धांतिक तालीम देनेके लिअे १० माहका (जुलाअी १९५१ से अप्रैल १९५२ तक) अेक वर्ग चलायेगा। अुसमें लगभग ४० पुरुषों और स्त्रियोंसे ज्यादाको भरती नहीं किया जायगा। अुन्हें (अ) खेती और (आ) कताअी तथा बुनाअी — जिनमें से हरअेक विद्यार्थी कोअी अेक विषय चुन लेगा—की बुनियादी दस्तकारियोंकी तालीम दी जायगी। सारे विद्यार्थियोंसे, भले वे कोअी भी दस्तकारी क्यों न चुनें, वस्त्रस्वावलम्बनके लिअे कातनेकी और रसोअीघरसे सम्बन्ध रखनेवाली बागवानीमें भाग लेनेकी अपेक्षा रखी जायगी। अिससे कम समयके पाठ्यक्रम नहीं रखे जायंगे।

अुम्मीदवारोंको साधारण तौर पर १९ वर्षसे अूपर और ३० वर्षसे कम आयुवाले और शारीरिक दृष्टिसे पूर्णतया स्वस्थ होना चाहिये। अुम्मीदवारोंके लिअे अेकसी शैक्षणिक योग्यताका आग्रह नहीं रखा जायगा, लेकिन अुनमें किसी भारतीय विश्व-विद्यालयकी अिंटरमिजिअेट क्लासका सामान्य ज्ञान तो कमसे कम होना ही चाहिये। दूसरी सब बातें अेकसी होने पर भी अैसे विद्यार्थियोंको पहले चुना जायगा, जिन्हें किसी न किसी दस्तकारीका ज्ञान है, जिन्हें किसी तरहकी रचनात्मक समाज-सेवाका पूर्व अनुभव है या जो नअी तालीमके किसी विशेष कामकी तालीम ले रहे हैं— जिसमें वे तालीम खतम होने पर फिरसे लग जायंगे।

अब वह समय आ गया है, जब कअी राज्योंमें पोस्ट-ग्रेज्युअेट स्तरके शिक्षक-ट्रेनिंग कालेज खुलने चाहियें, ताकि वे नअी तालीमके ग्रेज्युअेट शिक्षकोंकी अपनी स्थानीय जरूरत पूरी कर सकें। तालीमी संघ कुछ सुयोग्य कार्यकर्ताओंको भरती करके और भावी प्रादेशिक ट्रेनिंग कालेजोंमें पढ़ा सकनेकी दृष्टिसे अुन्हें तैयार करके अैसे राज्योंकी जरूरत पूरी करनेकी भरसक कोशिश करेगा। आशा की जाती है कि अिस कामके लिअे अैसे स्त्री-पुरुष चुने जायंगे, जो नअी तालीमके क्षेत्रमें पहलेसे कुछ अनुभव और तालीम पा चुके हैं।

जो संस्थायें और व्यक्ति अिस पाठ्यक्रमके विषयमें ज्यादा जानना चाहते हैं, अुनसे निवेदन है कि वे प्रिन्सिपाल, नअी तालीम भवन, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम (वर्धा), मध्यप्रदेशको विस्तृत प्रास्पेक्टस और प्रार्थनापत्रके लिअे लिखें। प्रार्थनापत्र प्रिन्सिपालके पास जल्दीसे जल्दी भेज दिये जाने चाहियें। १५ मअीसे पहले तो हर हालतमें पहुंच ही जाने चाहियें।

(अंग्रेजीसे) **मारजोरी साअिक्स**

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

५ मअी १९५१

नियंत्रणों पर पुनर्विचार

अभी सर्वोदय समाजके सम्मेलनमें अन्नके नियंत्रण और अुसकी मापबन्दी पर जो चर्चा हुअी, वह काफी फलप्रद रही। योजना-समितिके सदस्य श्री रा० कृ० पाटीलने अिन सवालों पर सरकारका दृष्टिकोण काफी विस्तारपूर्वक समझाया। अुन्होंने बताया कि द्वितीय जागतिक युद्धके पहले भी भारत १३ लाख टन अनाज बाहरसे मंगवाता था। देशके बंटवारे और प्रतिवर्ष ४० लाखके हिसाबसे बढ़ रही हमारी जनसंख्याके कारण यह परिस्थिति और ज्यादा बिगड़ गयी है। हालत आज अिस हद पर पहुंच गअी है कि हमें प्रतिवर्ष ६३ लाख टन अनाजकी कमी हो रही है, जिसके कारण हमें बाहरसे अनाज मंगवाना पड़ता है और यहां मूल्योंकी महंगाअी रोकनेके लिअे नियंत्रण और मापबन्दी जारी रखनी पड़ रही है।

वर्तमान परिस्थितिमें किंचित् नियंत्रणकी आवश्यकता मानी जा सकती है। पर, जैसा आचार्य विनोबा और सम्मेलनके दूसरे वक्ताओंने बताया, नियंत्रणोंके रूप और अुनकी पद्धतिमें मूलगामी परिवर्तन करनेकी जरूरत है। सरकार और योजना-समिति अिन सुझावों पर सावधानीसे विचार कर सकें, अिसलिअे यहां अुनका सारांश दे देना अुपयोगी होगा:

१. शहरी क्षेत्रोंमें सरकार नियंत्रित दर पर अनाजकी सुविधा गरीब और मध्यम वर्गके ही लोगोंको दे। समाजके बाकी लोगोंको खुले बाजारसे खरीदनेकी छूट रहे। खुले बाजारके लिअे भी सरकार 'कानूनी कीमत' ठहरा सकती है और अुसे समय-समय पर बदलती रह सकती है। यदि कोअी नागरिक अिस कानूनी कीमतसे ज्यादा देनेके लिअे राजी है, तो अैसे क्रय-विक्रयको कालाबाजारका नाम न दिया जाय। लेकिन यदि किसीको लगे कि व्यापारीकी मांगी हुअी कीमत अनुचित है और कानूनी कीमतसे ज्यादा है, तो अुसे न्यायालयमें जानेकी छूट रहनी चाहिये। अैसे नागरिकोंकी सुविधाके लिअे सस्ते और तुरंत न्यायकी व्यवस्था होनी चाहिये। खुले बाजारके प्रचलनसे कालाबाजार खतम हो जायगा और साथ ही खुले बाजारकी अिस खरीद-फरोख्तमें सरकारको आयकर और बिक्रीकरसे काफी आमदनी भी होगी।

२. अनाजका बंटवारा, जहां तक बने, ग्राहकोंकी सहयोग-समितियोंके द्वारा होना चाहिये। अिससे अनाजकी व्यवस्था पर हो रहा सरकारका अधिकांश खर्च कम हो जायगा और 'परवाना' (permit) आदि देनेमें रिश्ता, दोस्ती और सिफारिश आदिका खयाल करने और पक्षपात करनेके जो दोष आ गये हैं, अुनका भी अन्त हो जायगा। सरकारको तुरंत ही यह घोषणा कर देनी चाहिये कि यदि किसी शहर या मुहल्लेके ग्राहकोंका कोअी संघ — अुदाहरणार्थ सौ कुटुम्ब परिवारोंका — शहरके अन्न-अधिकारीको यह अर्जी करे कि वे सहकारी-मंडल द्वारा नियंत्रित अनाजोंके बंटवारेका काम खुद करना चाहते हैं, तो अर्जी करनेवालोंकी प्रामाणिकताकी जांचके बाद, अुनकी यह प्रार्थना अेकदम मंजूर कर लेनी चाहिये। अनाजके बेचने और वितरणके लिअे सरकारके मौजूदा तंत्र पर लोगोंका विश्वास नहीं रह गया है; अुस पर खुले आम नालायकी और भ्रष्टाचारका आरोप किया जाता है। बंटवारेकी जिम्मेदारी खरीदारों पर ही डाल दी जाय, तो सरकार लोगोंकी आलोचनाकी आंधीसे भी बचेगी और कांग्रेसके तथा अन्य राष्ट्रीय कार्यकर्ताओंको अेक रचनात्मक काम भी मिल जायगा। आजकी परिस्थितिका सबसे खेदजनक दोष यही है कि जहां अेक ओर सत्ताधारी कांग्रेसियों और सरकारी अधिकारियोंने अपने सिर अनेक जिम्मेदारियां ले ली हैं, वहां दूसरी ओर वे सब कार्यकर्ता, जो आजादीके लिअे अितनी बहादुरीसे लड़ते रहे, बेकार हैं। अुनके पास कोअी कार्यक्रम ही नहीं है। अिसलिअे वे बेकार बैठे-बैठे सरकारकी कटु आलोचना करते रहते हैं।

३. देहाती क्षेत्रोंमें सरकारको चाहिये कि वह भू-स्वामियोंसे कहे कि वे खेतिहर मजदूरोंको अुनकी मजदूरीका अेक हिस्सा अनाजके रूपमें दें। अिस तरह खेतिहर मजदूरोंको कुछ अनाज तो मिल ही जायगा। मजदूरीमें दिया जानेवाला यह अनाज निश्चित होना चाहिये, बाकी मजदूरी सालमें समय-समय पर कुछ बदलती रह सकती है। आचार्य विनोबा अपनी पैदल यात्रामें लोगोंसे यह व्यवस्था अपनानेके लिअे कह रहे हैं; और अिसके व्यावहारिक परिणाम भी अच्छे आये हैं।

४. आचार्य विनोबा अिस बात पर भी जोर दे रहे हैं कि अनाज-वसूलीकी जगह सरकार जमीनका लगान ही अनाजके रूपमें ले। अिससे सरकारको सहज ही काफी अनाज मिल जायगा, जिसे वह नियंत्रित मूल्यों पर बेचती रह सकती है। मौजूदा लगान कोअी बीस वर्ष पहले निश्चित हुआ था और अुसे बदलना जरूरी हो गया है। प्रान्तीय सरकारें चुनावके पहले यह काम करनेमें हिचकती हैं। लेकिन सही चीज करनेमें देर नहीं होनी चाहिये।

५. सरकार अनाजके अुत्पादनको प्रथम महत्त्वका काम माने। जूटका अुत्पादन बढ़ाया जाय, अुससे डालर मिलेंगे, और डालरोंसे फिर अनाज मंगवाया जायगा, अैसी भी अेक कोशिश हमारे यहां चल रही है। लेकिन यह अल्पदृष्टिकी नीति है। युद्ध आया, तो हमारी जनता गेहूं और चावलके बदले जूट तो नहीं खा सकेगी। अिसलिअे सरकारकी अन्न-स्वावलम्बन विषयक नीति निश्चित और स्पष्ट होनी चाहिये।

६. 'अधिक अन्न अुपजाओ' आन्दोलन युद्ध-स्तर पर चलना चाहिये। सरकारोंके खेती-विभाग अपने कर्तव्योंका पालन ज्यादा सक्रिय और व्यावहारिक ढंगसे करें। अभी आये समाचारोंसे पता चलता है कि ब्रिटेनमें अनाजका अुत्पादन आज युद्ध-पूर्वकालकी अपेक्षा ४० प्रतिशत अधिक है। भारतमें हम भी अैसी कामयाबी क्यों नहीं दिखा सकते? भारतीय रिजर्व बैंककी रिपोर्टका कहना है कि हमारा 'अधिक अन्न अुपजाओ' आन्दोलन जैसा निष्फल हुआ है, अुस पर हमें लज्जा आनी चाहिये। केन्द्रीय खेती-विभागको अिस रिपोर्ट पर गंभीर विचार करना चाहिये और अपनी योजनाओंमें आमूलाग्र दुरुस्ती करनी चाहिये। जनताका सहकार तभी मिल सकता है, जब अुसे यह विश्वास हो जाय कि सरकारी योजनायें निर्दोष हैं, और वह अुन पर सच्चाअीसे अमल करेगी।

वर्धा, २०-४-'५१ **श्रीमन्नारायण अग्रवाल**

(अंग्रेजीसे)

हमारा नया प्रकाशन

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

टिप्पणियां

शराबबंदी आशीर्वादरूप है

बम्बअीमें रहनेवाले, जाफराबाद (सौराष्ट्र) के अेक वतनीने शराबबंदीके बारेमें नीचे दिया हुआ पत्र लिखा है। यह हरअेकके ध्यानमें लाने जैसी चीज है:

"सविनय निवेदन है कि जबसे शराबबंदी अमलमें आयी है, तबसे शराबसे कमानेवालोंका तो विरोध है ही। लेकिन कुछ समयसे समाजका धनीवर्ग और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शराबबंदीकी नीतिको भूलभरी समझते हैं, यह देखकर सचमुच दुःख होता ह। पीनेवाले कमानेवालोंका विरोध करें, अिसमें कुछ ताज्जुब नहीं; धनीवर्ग दूसरे करोंसे बचनेके लिअे नीचेके वर्गके लोगोंको शराबकी खराबीमें फंसाये रखकर सरकारको आमदनी करानेके लिअे अिस नीतिकी असफलता चाहें, यह भी समझ सकते हैं। परंतु समझदार वर्ग, जिसका अिसमें कोअी स्वार्थ नहीं, भी देशकी आर्थिक दुर्दशाके नाम पर अिस बड़ी आमदनीको न छोड़नेकी आशा रखे, तो यह बहुत ही दुःखदाअी है।

"शराबको जारी रखनेमें आर्थिक स्थिरता मानी जाती है। क्या यह (नीति) शराबसे बरबाद होनेवाले कुटुंबोंको सब तरहसे पायमाल करनेका आमंत्रण नहीं है?

"शराबबंदीके विरोधियोंसे मेरी नम्र विनती है कि शराबबंदीके फायदे देखने हों तो मैं अुन्हें अपने वतन जाफराबाद (सौराष्ट्र) में आनेका आमंत्रण देता हूं। जिस गांवमें शराब पीकर मल्लाह लोग हमेशा झगड़ते थे, खानेके लिअे अुनके पास अन्न नहीं था, पहननेके लिअे कपड़े नहीं थे, घर पर छत भी नहीं थी, वहां आज संपूर्ण शराबबंदीसे बिलकुल कायापलट हो गअी है। शुरूमें कहीं-कहीं शराब बनती भी थी। अब लोगोंमें अितनी समझ आ गअी है कि यह आदत बिलकुल जरूरी तो नहीं, लेकिन हर तरहसे नुकसान पहुंचानेवाली है। और अीश्वरकी दयासे यह शराब पीनेवाला वर्ग अब शराबबंदीको दिलसे आशिष देता है।"

(गुजरातीसे)

म० देसाअी

आश्रमजीवन अनुभव करनेकी व्यवस्था

वर्धाकी विभिन्न रचनात्मक संस्थाओंका परिचय हो और श्री विनोबाजी, श्री किशोरलालभाअी आदिका सहवास मिले, अिस तरहकी कुछ व्यवस्था धूपकालकी छुट्टियोंमें करनेकी मांग कअियोंकी ओरसे, विशेषतः विद्यार्थियोंकी ओरसे आती रही है।

वर्धाकी कअी संस्थाओंका मुख्य कार्य धूपकालकी छुट्टियोंमें आम तौरसे बन्द रहता है। अिस सालके धूपकालमें श्री विनोबाजी तो अपनी पैदल यात्रामें ही होंगे। श्री किशोरलालभाअीके प्रत्यक्ष सहवासका लाभ लेना भी कई कारणोंसे कठिन ही है।

फिर भी जिन्हें आश्रमजीवनका अनुभव लेनेमें रुचि हो, अुनके लिअे यह व्यवस्था करनेका सोचा गया है कि वे अपने खर्चसे सेवाग्राम आश्रममें १५ मअीसे अेकाध महीने तक रह सकते हैं।

आश्रममें रहते हुअे ढाअी-तीन घंटा खेतीका काम, ढाअी-तीन घंटा वस्त्र-विद्याका काम और दो-अेक घंटा घरेलू काम यानी रसोअी, पिसाअी, सफाअी आदि करना होगा। मअी महीनेमें यहां ११०° से ११५° तक अुष्णता होती है और लू भी चलती है। अितनी धूप और अूपरका श्रम सहन करने लायक जिनका शरीर न हो वे आनेका विचार न करें।

शरीरश्रम-प्रधान जीवनके साथ-साथ वर्धाकी संस्थाओंका परिचय और श्री काकासाहब कालेलकर, श्री किशोरलालभाअी और श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू आदिसे संभाषण वगैराकी यथासंभव व्यवस्था की जायगी।

आश्रममें भोजन वगैराका मासिक खर्च रु० २५ आवेगा।

भोजन बिना मसालेका रहेगा।

आश्रममें रहते हुअे बीड़ी, पान, चाय, आदि किसी तरहके व्यसनकी अिजाजत नहीं रहेगी।

पहननेके सारे वस्त्र खादीके होने चाहियें।

अपने साथ बिस्तर, थाली, कटोरी, लोटा, चम्मच लाना चाहिये।

कातना जाननेवाले कताअी और तुनाअीका सामान भी साथ लावें। दूसरोंको यहांसे मोल लेना होगा।

अिस बारेमें सारी लिखा-पढ़ी नीचे लिखे पते पर करनेकी कृपा करें। लेखी अिजाजतके बगैर कोअी न आवे।

२४-४-'५१

वल्लभ स्वामी
सहमंत्री, सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम (वर्धा)

अ० भा० ग्रामोद्योग संघ

ग्रामसेवक-विद्यालयके अभ्यासक्रम

अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, मगनवाड़ी, वर्धाके मंत्री श्री जी० रामचन्द्रन् लिखते हैं:

मगनवाड़ीके ग्रामसेवक विद्यालयका नया सत्र १ जुलाअी, १९५१ से शुरू होगा। विद्यालयके विभिन्न अभ्यासक्रम अिस प्रकार हैं:

१. ग्रामोद्योग नयी तालीम (अभ्यासक्रमकी अवधि — २ साल):—

अिस अभ्यासक्रममें ग्रामोद्योगोंकी व्यावहारिक तालीमके साथ-साथ ग्रामोद्योगों द्वारा ग्रामोपयोगी प्रौढ़-शिक्षाकी तालीम भी दी जायगी। विद्यार्थियोंको मगनवाड़ीके दो प्रधान अुद्योगों, अर्थात् घानी और कागजमें से कोअी अेक सिखाया जायगा। खेती, मधु-मक्खियोंका पालन, खजूरका गुड़, चक्की, साबुन बनाना, मगन चूल्हा, मगन दीप, बैकरी और खिलौना बनाना आदि दूसरे अुद्योग भी, जिनकी व्यवस्था यहां है, सिखाये जायेंगे। जो ग्रामोद्योग यहां सिखाये जायेंगे, अुनके साथ अुन अनेक विषयोंका अनुबन्धन भी किया जायगा, जिनके ज्ञानके बिना कोअी स्वतंत्र देशका योग्य नागरिक नहीं बन सकता। कल्पना यह है कि तालीम लेनेके बाद ये विद्यार्थी ग्रामोद्योगों द्वारा अुत्पादक काम करते हुअे ग्रामोपयोगी प्रौढ़ शिक्षा-केन्द्र खोल सकेंगे।

२. 'विनीत' (अभ्यासक्रमकी अवधि — १ साल):—

ग्रामोद्योगोंका १ सालका व्यावहारिक पाठ्यक्रम है। अुक्त अुद्योगोंका सैद्धान्तिक ज्ञान भी आवश्यकताके अनुसार दिया जायगा। हरअेक विद्यार्थीको तेल-घानी या कागजकी और पिछले पैरामें अुल्लिखित बाकी सब अुद्योगोंकी तालीम दी जायगी।

३. छोटे-छोटे अभ्यासक्रम, जिनमें यहां चल रहे ग्रामोद्योगोंमें से किसी भी अुद्योगकी तालीमका प्रबंध होता है।

सिर्फ ग्रामोद्योग नयी तालीमके दो-वर्षीय पाठ्यक्रमके लिअे कुछ छात्रवृत्तियां प्राप्त हैं। जिन्हें रचनात्मक कामका कुछ अनुभव हो चुका है, अुन्हें तरजीह मिलेगी। अुम्र २० और ३५ सालके बीचमें होनी चाहिये। प्रवेशकी अल्पतम योग्यता 'मेट्रिक्युलेशन' या समकक्ष साधारण ज्ञान है। शिक्षाका माध्यम हिन्दी या अंग्रेजी है, अिसलिअे अिनमें से किसी अेक भाषाका अच्छा व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। हिन्दीका अच्छा ज्ञान विशेष योग्यता मानी जायगी। प्रतिदिन कमसे कम चार घंटे अुत्पादक श्रम करना पड़ेगा, अिसलिअे प्रवेशार्थियोंको कड़ी मेहनत कर सकना चाहिये। छात्रवृत्तियां केवल अुनको ही दी जायंगी, जो यह निश्चित भरोसा दे सकेंगे कि तालीमके बाद कोअी संस्था या व्यक्ति अुन्हें अुसी काममें नियुक्त करेगा जिसकी तालीम अुन्होंने पायी है।

'विनीत'-अभ्यासक्रमके लिअे प्रवेशकी न्यूनतम योग्यता हिन्दी या अंग्रेजीका अच्छा कामचलाअू ज्ञान और प्राथमिक शालाकी श्रेणीका साधारण ज्ञान है।

ज्यादा जानकारी हमारे अभ्यासक्रम और नियमावली आदिकी छपी हुअी विवरण-पत्रिकाओंसे मिलेगी। विवरण-पत्रिका मंगवानेके लिअे पोस्टेजके लिअे तीन पैसेका टिकट रखकर अर्जी करनी चाहिये। प्रवेशकी अर्जियां हमारे पास १० जून, '५१ तक पहुंच ही जानी चाहियें। सारा पत्र-व्यवहार मंत्री, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, मगनवाड़ी, वर्धासे किया जाय।

मगनवाड़ी वर्धा, २७-४-'५१

जी० रामचंद्रन्
मंत्री

www.vinoba.in

विनोबाकी पैदल यात्रा

६

बारहवां मुकाम

[ता० १९-३-'५१ : अिछोड़ा : आठ मील]

आजका मुकाम आठ ही मीलकी दूरी पर होनेके कारण बातकी बातमें अिछोड़ा आ गया। लोग स्वागत करने आये, और "गांव आ गया, यहीं रुकना है" अैसा हम लोगोंने कहा तो विनोबाको विश्वास नहीं हुआ। "आज तो बहुत जल्द मुकाम पर पहुंच गये। कमसे कम बारह मील तो होना ही चाहिये"—वे बोले।

सारा गांव देख लिया। सवेरेसे देहातके लोगोंका आना शुरू हो गया था। डाक बंगलेमें डेरा था। बरामदा, वृक्षोंकी छाया, कम्पाअुंडका कोना-कोना लोगोंसे भर गया। बाजारका दिन भी था। मैंने पूछा—"क्या बाजारके लिअे आये हो?" लोगोंने कहा—"नहीं। बाबाजीके आनेकी खबर थी अिसलिअे आये हैं।" विनोबाके लिअे लोगोंमें प्यार बढ़ता हुआ दिखाअी देता था। वे बिना संकोच विनोबाके पास आकर बैठ गये। विनोबाजी तन्मय होकर तेलुगू गीता पढ़ते थे। लोग सुनते रहे। कुछ देर बाद जब अपने अिर्द-गिर्द सैकड़ों लोगोंको देखा, तो तेलुगूमें बातचीत करने लगे। अेक भाअीके हाथमें मराठी 'गीताअी' देखकर विनोबाने पूछा—यहां अधिक लोग कौनसी भाषा समझते हैं? "तेलुगू" —जवाब मिला।

विनोबा – मराठी समझनेवाले भी दीखते हैं?

जवाब – जी हां। परंतु जैसे मराठीवाले तेलुगू समझ लेते हैं, वैसे तेलुगूवाले मराठी नहीं समझते।

विनोबा – भाषण किस भाषामें होना चाहिये?

जवाब – तेलुगूमें होगा तो सब समझ लेंगे।

बोलनेवाला मराठी-भाषी था। मैं मन ही मन अचंभा करता रहा। अकसर कअी सरहदी शहरोंमें मराठी-हिन्दी या हिन्दी-गुजराती वाद चलता रहता है। पर यहांके मराठी लोगोंने विनोबाको तेलुगूमें भाषण करनेकी सलाह दी।

व्यापार-धर्म

बाजारमें अेक अशुद्ध व्यवहारका किस्सा हो गया था। अुसकी बात विनोबाके कान पर आ गयी थी। लोक-शिक्षणकी दृष्टिसे अिसी घटनाको अुन्होंने अपने प्रार्थना-प्रवचनका विषय बनाया।

हिंदुस्तानके बाजारका बिगड़ा रूप

आप अितने लोग दूर-दूरके गांवोंसे आकर यहां अिकट्ठे हुअे हैं, यह देखकर मुझे खुशी होती है। मुझे अिस गांवकी कोअी जानकारी नहीं थी। लेकिन यहां मुकाम रखा गया वह अच्छा ही हुआ, क्योंकि आज यहांका बाजार था। दुनिया भरमें बाजार कैसे चलता है वह तो दुनिया जाने, लेकिन हिंदुस्तानमें जहां बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठका बाजार होता है। आजका ही किस्सा है। अेक दुकान पर अेक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दुकानदारने अुसको वह पुस्तक १४ आनेमें दी। फिर यह आदमी दूसरी दुकान पर पहुंचा। वहां अुसको वही पुस्तक दिखाअी दी, तो अुसने अुसके दाम पूछे। दुकानदारने ६ आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दुकान पर वापिस आया और दुकानदारसे पूछने लगा कि अिस पुस्तकके तुमने १४ आने कैसे लिये, जबकि यह दूसरी दुकान पर तो ६ आनेमें मिलती है। दुकानदारने जवाब दिया, भाअी मैं तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैंने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दुकान पर ६ आनेमें मिलती थी तो तुम वहींसे खरीदते। यानी दूसरी दुकानसे नहीं खरीदी यह खरीददारका ही दोष है, दुकानदारका कोअी दोष ही नहीं है। यह सब हो रहा था, अितनेमें हमारा अेक साथी वहां पहुंचा। अुसने पूछा क्या बात है? अुस आदमीने कहा कि यह पुस्तक अिस दुकानदारने १४ आनेमें दी, जबकि दूसरी दुकान पर ६ आनेमें मिलती है। हमारे भाअीने पुस्तक खोलकर दाम देखे और कहा, अिस पुस्तकके दाम न १४ आने हैं और न ६ आने हैं, बल्कि ३ आने हैं। वह कीमत अुस पुस्तक पर छपी थी। अुस तीन आनेमें दुकानदारका कमिशन आदि सब आ गया। अिसलिअे दुकानदारको अुससे अधिक कीमत लेनेका कोअी हक नहीं था। फिर दुकानदारका और पुस्तक खरीदनेवालेका झगड़ा शुरू हुआ। मैं अिस बातको आगे बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते हैं, यह समझ लो। "झूठ ही लेना, झूठ ही देना, झूठ चबेना!"

व्यापारियोंका धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवाका भाव रखें। व्यापार अेक धर्म है। शास्त्रकारोंने बताया है कि वैश्योंको व्यापारके धर्मका आचरण करना चाहिये। धर्मका मतलब लूटना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज अेक जगह नहीं मिलती है अुसको दूसरी जगहसे लाकर लोगोंको देना और अुसमें जो अपनी मेहनत लगी हो अुसको जोड़कर ठीक भावसे बेचना। अिसका अर्थ है व्यापार।

मालिकको जाग जाना चाहिये

वास्तवमें किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। सेवक कभी स्वामीसे बढ़कर नहीं होता। जब हिन्दुस्तानमें मालिक गरीब है, तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात अुलटी हो गअी है। जो मालिक है वह गरीब बन गया है, और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिकको लूटकर। आज अगर अुन सेवकोंको कोअी अुनका धर्म सिखावे तो वे नहीं सीखेंगे। अिसलिअे अब मालिकको ही जाग जाना चाहिये। मालिकके जागनेका मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गांववाले अपनी जरूरतकी चीजें गांवमें ही बना लें, तो हर गांव बादशाह बन सकता है। यहां किसान क्या खरीदनेके लिअे आता है? अुसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेतमें भाजी पैदा नहीं कर सकता? आंगनमें भी भाजी हो सकती है। कोअी कपड़ा खरीदने आते हैं। गांवमें कपड़ा क्यों नहीं बन सकता? अगर कपड़ा नहीं बन सकता, तो कल आप रोटी भी बाजारसे ही खरीदने लगेंगे। अगर अिस तरह बनी बनाअी चीजें खरीदते रहेंगे, तो लूटसे आपको कौन बचायेगा?

भगवानकी व्यवस्थासे सबक सीखो

हमें गांधीजीने चरखा चलानेको कहा। और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। अुनका वह संदेश अब भी सुनने लायक है। लोग कहते हैं अब तो स्वराज्य हो गया; अब कातनेकी क्या जरूरत है? सरकारका काम है कि वह कपड़ा हमें दे। मैं कहता हूं कि आप कल कहेंगे, स्वराज्य आया है तो अब हम हल नहीं चलायेंगे, सरकारको हमें अनाज देना चाहिये। लेकिन स्वराज्यका यह मतलब नहीं है कि हम सारे काम छोड़ दें। दिल्लीके लोग बड़े हैं और बुद्धिमान हैं, अिसमें शक नहीं है। लेकिन अुनसे भी परमेश्वर अधिक बड़ा और बुद्धिमान है। वह किस तरह हमारा पालन करता है, अिसे देखिये। अुसने हमको हाथ दिये, पांव दिये, नाक दी, कान दिये और बुद्धि दी। और कहा कि अपने हाथोंसे काम करो, तुम्हारा पेट भरेगा। अुसने थोड़ी-थोड़ी बुद्धि हरेकको दी। अगर वैसा वह नहीं करता और बुद्धिका सारा खजाना वैकुंठमें ही रखता, तो हमारा पालन वह कैसे कर सकता था? अुस दशामें भगवानको चैनसे नींद भी नहीं आती। लेकिन कहते हैं कि भगवान तो शेषशायी है और योगनिद्रामें सो रहा है। वह अिसलिअे सो सकता है कि अुसने सबको अकल दी और काम करनेकी जिम्मेवारी अुठानेका ढंग बताया। हम हाथोंसे काम करते हैं। फिर भी अगर काम नहीं बनता है तो परमेश्वरसे प्रार्थना करते हैं, और वह हमें मदद देता है। हम अगर हाथोंसे काम नहीं करते, तो भगवान भी

www.vinoba.in

मदद नहीं करता। अिसी तरह हम अगर हाथोंसे काम नहीं करेंगे, तो दिल्लीकी सरकार भी हमको कुछ मदद नहीं दे सकेगी।

सरकार खास प्रसंगके लिअे है

आप कहते हैं कि अब स्वराज्य आ गया है, तो हमारे लिअे कुछ कर्तव्य ही बाकी नहीं है। सब सरकार करेगी। हरेक कामके लिअे अगर हम सरकार पर अवलंबित रहेंगे, तो वह स्वराज्य होगा या गुलामी? अपने गांवमें हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिसको मददके लिअे बुलायेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिसकी हम मदद मांगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोजकी शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाअी, हमारा शिक्षण सारा गांवमें ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांवमें स्कूल खोले। लेकिन सरकारके पास अितना पैसा नहीं है। अधिक कर देनेके लिअे आप तैयार नहीं हैं। मैं कहता हूं कि आप अेक-दूसरेको क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है, वह अगर रोज अेक घंटा दूसरेको पढ़ायेगा तो सारा गांव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार जनसंख्याके गांवमें दस लोग पढ़े हुअे हैं। वे अगर हर साल दस लोगोंको पढ़ा देंगे, तो अेक सालमें सौ लोग पढ़े-लिखे बन जायेंगे। और अिस तरह दस सालमें सारा गांव पढ़ा-लिखा बन जायेगा। यह अितनी आसान बात है। यही बात दूसरे कामोंके बारेमें भी है।

अुद्धरेत् आत्मनात्मानम्

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहियें। भगवानने गीतामें कहा है "अुद्धरेदात्मनात्मानम्।" खुदका अुद्धार खुदको ही करना चाहिये। दूसरों पर भरोसा रखकर मत बैठिये। गांवका राज गांववालोंको स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्लीमें या आदिलाबादमें है, वह आपको काम नहीं देगा। आपको वही स्वराज्य काम देगा, जो आपके गांवमें बनेगा। यही देखिये न। बाहरसे मनुष्यके शरीरको वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है, जब तक शरीरमें ताकत बची हुअी होती है। अगर शरीरकी ताकत खतम हो जाती है, तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता है। अिसलिअे हमारा काम यह है कि शरीरका आरोग्य हम अच्छा रखें। अुसके लिअे हमें गांधीजीने बताया है कि कुदरती अिलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, पानी, मिट्टी आदिसे रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आजकल तो लोग कहते हैं हर गांवमें अेक दवाख़ाना हो। अभी तक वैसा नहीं हुआ है, यह परमेश्वरकी कृपा है। अगर ये लोग हर गांवमें दवाखाना खोल सके, तो गांवका पैसा दवाखानेके निमित्तसे बाहर जायगा और रोग दस गुने बढ़ेंगे। जरा कहीं कुछ हुआ कि हम दवाखानेमें दौड़ेंगे। और यह समझ लो कि अेक दफा वैद्य अगर घरमें आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता है। कुछ लोग कहते हैं फलाना डॉक्टर हमारा फेमीली डॉक्टर है। यानी घरमें जैसे माता-पिता होते हैं, वैसे ही वह डॉक्टर भी घरका अेक हिस्सा बन गया! अिस तरह हर बातमें अगर हम गुलाम बनते जायेंगे, तो फिर स्वराज्य काहेका? सरकारका काम आपको बाहरसे कपड़ा ला देनेका नहीं है। वह आपको कातना-बुनना आदि सिखा देगी। वैसे तो सरकार आपकी खिदमत करनेके लिअे ही है। आप जैसा चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आपको अुसके लिअे पैसा खर्च करनेकी तैयारी रखनी होगी। आप यदि कहेंगे कि हम खेती नहीं करेंगे, हमें बाहरसे गल्ला दो, तो सरकार अमेरिकासे गल्ला ला देगी। अुसके लिअे आपको पैसा देना पड़ेगा। सरकार तो सेवक है। सेवकसे कैसी सेवा लेनी चाहिये, यह मैं आपको समझा रहा हूं। आप अुससे कहें कि हमें तालीम दो, हम स्वावलंबी बनना चाहते हैं।

भगवान झूठे पर प्रसन्न नहीं होता

आपका बाजार देखकर मुझे जो बातें सूझीं, वे मैंने आपके सामने रखीं। जब तक हिंदुस्तानके बाजारोंमें झूठ चलता है, तब तक हिंदुस्तान सुखी नहीं होगा। हम परमेश्वरका भजन करते हैं। लेकिन परमेश्वर झूठे पर कभी प्रसन्न नहीं होता। अेक दफा दुर्योधन गांधारीके पास आशीर्वाद मांगने गया था। युद्धका अवसर था। दुर्योधनने गांधारीसे कहा कि मुझे विजय मिले, अैसा आशीर्वाद दो। गांधारी तो दुर्योधनकी माता थी और अुसका दुर्योधन पर बहुत प्यार था। लेकिन अुसने अपने पुत्रसे कहा: "जहां धर्म होगा वहीं विजय होगी, यह मेरा आशीर्वाद है।" परमेश्वरका हम पर बहुत प्यार है। वह हमें कहता है कि सच्चाअीसे बरतो तो तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। अगर हम झूठे होंगे, तो परमेश्वर हमें अुसके लिअे सजा देगा। अुसमें भी अुसकी दया ही होती है। परमेश्वरकी दया अजीब होती है। पापीको शुद्ध करनेके लिअे वह सजा देता है तो अुसमें अुसकी दया ही होती है। अिसलिअे अगर हम परमेश्वरका आशीर्वाद चाहते हैं और जीवन सुखी हो अैसी अिच्छा रखते हैं, तो सत्यको नहीं छोड़ना चाहिये।

तेरहवां मुकाम

[ता० २०-३-'५१: निरड़गोंदी: ग्यारह मील]

सवेरे, कूचसे पहिले, रातके जो लोग आये थे, अुनसे विनोबाने बातचीत की। सवेरेकी प्रार्थनामें वे लोग शरीक हुअे ही थे। फिर रास्तेमें भी काफी दूर तक साथ चले। भक्तिभावसे विदा लेकर लौटे। साथमें लालटेन रहती ही है। सहज नीचे निगाह गअी, तो तेजीसे अेक सांप बायीं ओर निकल गया। पहिले विनोबाके पांवके नीचेसे, फिर मेरे, फिर पीछे गाड़ी आ रही थी, अुस गाड़ीके बैलोंके पावोंके नीचेसे। "जेथे जातो तेथे तू माझा सांगाती" तुकारामका वह गीत याद आये बिना नहीं रहा। विनोबा तो अितने तेज चलते हैं कि अुन्हें आगे जाकर जब हम लोगोंने बताया तब मालूम हुआ।

दोपहरमें विनोबा गांवके हर घरमें हो आये। प्रवेश करते ही दायीं ओर तेलघानी थी। अुसे देखा। चमार, बढ़अी, लुहार सबसे मिले। और लोगोंसे भी मिले। कअी चरखे भी गांवमें चलते हैं। फिर अेक कार्यकर्ताके घर अुन्हें थोड़ी देरके लिअे बैठना पड़ा। घरकी मालकिनने तिलक किया। माला पहिनायी। विनोबाने देखा कि मालकिन मिलकी धोती पहने हुअे है। कहा: "अब मैं तुम्हारे घर आ गया, तो मिलका कपड़ा जाना चाहिये।" पति तो खादी पहिनते ही थे। दोनोंने प्रतिज्ञा की।

चार बजे करीब पच्चीस स्त्रियां जुलूस बनाकर गाजे-बाजेके साथ गीत गाती हुअी डेरे पर पहुंच गयीं और कातने बैठ गयीं। विनोबा भी कातने बैठ गये। अिस सारी यात्रामें अिस किस्मका यह पहला ही दर्शन था। हम सबको ही बड़ा सुख मिला। विनोबाने सुखकी भावनाको और साथ ही अपने भयको शामकी प्रार्थनामें प्रगट किया:

"आपका यह गांव बिलकुल ही छोटा है। लेकिन अिस गांवमें मैंने जो काम देखा है, अुससे मुझे बहुत ही आनंद हुआ है। क्यों आनंद हुआ, यह आप लोगोंको नहीं मालूम हो सकता। बात अैसी है कि आपके गांवमें मैंने बीस-पच्चीस चरखे चलते हुअे देखे। अिस तरह चरखोंका काम मैंने अपनी अिस यात्रामें अभी तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देखकर मेरे हृदयको बड़ा संतोष हुआ। लेकिन आप लोगोंको मैं जागृत कर देना चाहता हूं। यहां अभी तक बाहरके व्यापारियोंका ज्यादा प्रवेश नहीं हुआ है। लेकिन आगे चलकर स्थिति अैसी ही नहीं रहेगी। बाहरके व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आजकल व्यापारियोंका सबसे अधिक डर लगता है। वास्तवमें व्यापारी तो होने चाहियें ग्रामोंके सेवक। लेकिन अिन दिनों अैसा हो गया है कि व्यापारियोंमें दया-धर्म नहीं-सा रहा है। अिसलिअे वे जब कहीं जाते हैं, तो गांवोंकी सेवाके बजाय अपने स्वार्थको ही देखते हैं। आज अेक भाअी मुझसे मिलने आये थे। बातचीतमें अुन्होंने बताया कि यह जिला, जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है, पैनगंगा पर पुल बननेके बाद आगे बढ़ जायेगा, क्योंकि फिर बरारके साथ बहुत

www.vinoba.in

व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा अिसका मतलब अितना ही है कि यहां व्यापारियोंका जमघट बन जायगा। मतलब अुसका अितना ही है कि फिर आपके गांवमें जो अच्छा दृश्य हमने आज देखा, वह देखनेको नहीं मिलेगा। बाहरके व्यापारी आपके गांवमें आयेंगे, कपड़ोंके अच्छे-अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभमें पड़कर अुनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गांवमें सूत कतता है। कुछ लोग हाथका कपड़ा पहनते हैं। लेकिन मिलका कपड़ा भी बहुत चलता है। जब वे व्यापारी आयेंगे तब साराका सारा कपड़ा बाहरसे आने लग जायगा। अिसलिअे मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहरका कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप अैसा नहीं करेंगे, तो आपके देखते-देखते सारा गांव दरिद्र हो जायगा।

मैं अभी हैदरावादमें होनेवाले सर्वोदयके सम्मेलनके लिअे जा रहा हूं। सर्वोदयका मतलब है सबकी अुन्नति। सर्वोदयमें यह बात नहीं आती कि किसी अेकका भला हो और दूसरेका नहीं। अिसलिअे सर्वोदयका चिंतन करनेवाले मुझ जैसोंके सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरोंके साथ देहातोंका भला कैसे होगा। हम चाहते हैं कि भला शहरोंका भी हो और गांवोंका भी। अेक जमानेमें हिन्दुस्तानके सारे गांव बहुत सुखी थे। परदेशसे आनेवाले लोग अिसकी गवाही देते थे। बीचमें जब अंग्रेज यहां आये, तो अन्होंने भी देखा कि यहां हर गांवमें कपड़ा बनता है और दूसरे भी बहुतसे अुद्योग चलते हैं। अुन्होंने लिखा है कि गांव-गांवमें दूध बहुत मिलता है। लेकिन आज हम देखते हैं कि लोगोंको मुश्किलसे दूध मिलता है। दूध नहीं, तरकारी नहीं, कपड़ा नहीं, और आज तो गल्ला भी बाहरसे आता है। यह हालत दो सौ सालके अन्दर हुअी है।

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते हैं कि हमारे गांव फिरसे सुखी हों। लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहातका रक्षण नहीं कर पायेंगे, देहातके अुद्योग कायम नहीं रख सकेंगे, तो हमारे गांव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्यका अर्थ ही यह है कि आप लोगोंको अपने गांवका कपड़ा पहनना चाहिये। अपने ही गांवकी चीजें खरीदनी चाहियें। बाहरका पक्का माल आपको नहीं खरीदना चाहिये। बल्कि अपने गांवमें खुद कच्चेसे पक्का माल बनाना चाहिये। आपके गांवमें पक्का माल बनेगा, तो शहरवाले खरीदेंगे और आपको लाभ होगा। लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहरसे खरीदेंगे, तो आपको नुकसान होगा। अगर आप अपने ही गांवमें कच्चे मालसे पक्का बनाते हैं, तो मजदूरी आपको मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है। अेक जमाना था जब हिंदुस्तानवाले अपने लिअे तो कपड़ा बनाते ही थे लेकिन बाहर भी भेजते थे। अुस जमानेमें लोगोंको चरखा चलानेके लिअे वक्त मिलता था और आज नहीं मिलेगा अैसी बात तो नहीं है। आज लोगोंकी संख्या बढ़ गयी है, जमीन कम हुअी है। अिसलिअे समय तो खूब मिलता है। अभी अेक जगह अेक गांवका सर्वे किया गया, तो मालूम हुआ कि वहांके लोगोंको साल भरमें छः माह काम नहीं मिलता। मैं देखता हूं कि आपके गांवमें बगीचे भी नहीं हैं। यानी आपके यहांकी खेती बारिशके पानी पर ही होती है। अिसलिअे वह काम अधिक नहीं रहता। समय काफी बचता है। अुसका क्या किया जाय? अगर कोअी व्यक्ति अैसा हो जो आपके गांवकी सेवा करे, तो आपके गांवकी अुन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गांवका ही होना चाहिये। कांग्रेसवालोंका काम है कि अैसे गांवकी सेवा करें। मुझे तो अैसे गांवमें रहनेकी अिच्छा हो जाती है। यहां रहा तो पहले मैं कातनेवालोंको धुनना सिखाअूंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग अुनके लिअे पूनी बनाते हैं। अपने घरमें कपास पैदा हो और दूसरा मनुष्य अुसकी पूनी बनावे तब मैं कातूं, अैसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घरमें पूनी बनाते हैं तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्लीमें हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाबकी निर्वासित स्त्रियोंको कातनेके साथ हमने पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ-दस नंबरका सूत कातती थीं, वे सोलह-बीस नंबर तकका सूत कातने लगीं। यानी पहले बिलकुल मोटा सूत कातती थीं और अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूतसे धोतियां और साड़ियां बन सकती हैं। आप देख रहे हैं कि अेक बहन यहां बैठी पूनी बना रही है। पांच-पांच छः-छः सालके बच्चे भी अैसी पूनी बना लेते हैं। अिस तरह अगर घरमें ही पूनी बनने लग जायगी, तो सूत अच्छा कतेगा।

फिर आपके यहां पहाड़ भी हैं। अगर मैं यहां रहा तो पहाड़से पत्थर ला-ला कर अुन पत्थरोंसे मकान बना लूंगा। अिस तरह अपने परिश्रमसे पक्के मकान बन जायेंगे। फिर सफाअीका काम शुरू कर दूंगा, ताकि गांवमें कोअी बीमारी न होने पावे। आप लोग बाहर खुलेमें पाखाना जाते हैं लेकिन अुस पर मिट्टी नहीं डालते। अिससे खादकी बरबादी होती है। हमारा हिसाब है कि फी आदमी मैलेकी कीमत चार रुपया होती है। मतलब यह कि पांच सौ जनसंख्याके आपके गांवमें दो हजार रुपयोंकी आमदनी बढ़ सकती है। अिस तरह गांव-गांव अुत्पादन भी बढ़ेगा और स्वच्छता भी बढ़ेगी। अब यह सारा काम अगर यहां कोअी मनुष्य रहेगा तो हो सकेगा। लेकिन बाहरसे मनुष्य कहांसे लावें? अिसलिअे यहीं पर कोअी कार्यकर्ता मिलना चाहिये।

अेक बात और। आपके गांवमें प्रेमभाव बढ़ना चाहिये। जैसा अेक परिवारमें प्रेम होता है, वैसा सारे गांवमें होना चाहिये। सारा गांव अेक परिवार ही हो जाना चाहिये।

तो आप लोग नित्य गांवमें अुद्योग बढ़ाअिये और प्रेमभाव बनाये रखिये।

लोगोंने कहा: आपने जो बातें कहीं, अुसके अनुसार काम करनेके लिअे यहां किसी कार्यकर्ताको भेजिये।

विनोबा: कार्यकर्ता बाहरसे नहीं आ सकता। आपके गांवका ही कोअी सेवक तैयार होना चाहिये। कोअी तैयार है?

जवाब: हमारे गांवमें राजेश्वर रेड्डी हैं। वे करें तो हो सकता है।

राजेश्वर रेड्डी वे ही सज्जन थे, जिनके घर आज खादीकी प्रतिज्ञा ली गयी थी। अगरचे वे अकसर निर्मलमें रहते हैं, अुन्होंने यहांके कामके लिअे कार्यकर्ताका प्रबंध करनेकी जिम्मेदारी ली। अिससे लोगोंको संतोष हुआ। अिस तरह जगह-जगह सर्वोदयका बीजारोपण करते हुअे तथा जहां संभव हो वहां कार्यकर्ताओंको काममें लगाते हुअे, विनोबा तेजीसे आगे बढ़ते जा रहे हैं।

दा० मूं०

विषय-सूची

		पृष्ठ
सोमनाथ मन्दिर	क० मा० मुंशी	७३
कस्तूरबा और गांधी स्मारक निधियां	ग० वा० मावलंकर	७३
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ	मारजोरी साअिक्स	७५
नियंत्रणों पर पुनर्विचार	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	७६
अ० भा० ग्रामोद्योग संघ	जी० रामचन्द्रन्	७७
विनोबाकी पैदल यात्रा – ६	दा० मूं०	७८
टिप्पणियां:		
शराबबन्दी आशीर्वादरूप है	म० देसाअी	७७
आश्रमजीवन अनुभव करनेकी व्यवस्था	वल्लभ स्वामी	७७

www.vinoba.in